इकनॉमिक टाइम्स
19/4/13

# आने वाले क्वार्टर्स में बढ़ेगी मिठास

लेखाजोखा ▪ शुगर सेक्टर

- **पिछले साल** नवंबर में सरकार ने ऑयल मार्केटिंग कंपनियों (ओएमसी) को पेट्रोल में 5 फीसदी एथॉनल मिलाकर बेचने का आदेश दिया था
- **पेट्रोल में** एथनॉल मिलाकर बेचने के नियम का फायदा शुगर कंपनियों को जून 2013 क्वार्टर से मिलने लगेगा

[ सूरज साउकार *ईटीआईजी* ]

**सरकार ने** पेट्रोल में एथनॉल मिलाना अनिवार्य कर दिया है। इससे शुगर कंपनियों को फायदा होगा। हाल ही में शुगर सेक्टर को डीकंट्रोल करने के लिए भी कुछ कदम का एलान किया गया है। इससे भी इस सेक्टर की कंपनियों का प्रॉफिट लॉन्ग टर्म में बढ़ेगा।

पिछले साल नवंबर में सरकार ने ऑयल मार्केटिंग कंपनियों (ओएमसी) को पेट्रोल में 5 फीसदी एथॉनल मिलाकर बेचने का आदेश दिया था। इसके बाद ओएमसी ने 110 करोड़ लीटर एथनॉल खरीदने का टेंडर दिया था। शुगर कंपनियां सबसे ज्यादा एथनॉल की सप्लाई करती हैं। उन्होंने 34-36 रुपए लीटर की कीमत पर इसकी सप्लाई की पेशकश की है। यह पिछले सीजन के 27 रुपए लीटर से 20 फीसदी ज्यादा है। सरकार ने 2010 में एथनॉल की कीमत 27 रुपए लीटर तय की थी। पेट्रोल में एथनॉल मिलाकर बेचने के नियम का फायदा शुगर कंपनियों को जून 2013 क्वार्टर से मिलने लगेगा। हालांकि, इसका ज्यादा असर सितंबर 2013 क्वार्टर से दिखेगा। ईटीआईजी के अनुमान के मुताबिक, बलरामपुर चीनी और श्री रेणुका शुगर्स जैसी बड़ी कंपनियों के प्रॉफिट में इससे सितंबर क्वार्टर में क्रमश: 15 फीसदी और 18 फीसदी की बढ़ोतरी हो सकती है। वहीं, बजाज हिंदुस्तान के अर्निंग पर शेयर सिर्फ इस वजह से 50 पैसे बढ़ेगा। सरकार के शुगर सेक्टर को डीकंट्रोल करने के हालिया एलान के बावजूद बड़ी कंपनियों में इनवेस्टर्स ने ज्यादा दिलचस्पी नहीं दिखाई है। इसकी वजह यह है कि इस साल शुगर की कीमत में बढ़ोतरी नहीं हुई है और गन्ने का दाम भी बढ़ा है। महाराष्ट्र और कर्नाटक का शुगर प्रोडक्शन में बड़ा योगदान है और इन दोनों राज्यों में सूखा है। इसके बावजूद इस सीजन में शुगर प्रोडक्शन 2.41 करोड़ टन रहने की उम्मीद है, जो पिछले साल से सिर्फ 2 फीसदी कम है।

रिवाइज्ड एस्टिमेट के मुताबिक, इस साल देश में 2.45 करोड़ टन चीनी का प्रोडक्शन होगा। पिछले साल यह 2.6 करोड़ टन था। शुरू में इस साल प्रोडक्शन 2.3 करोड़ टन रहने का अनुमान लगाया गया था। इस वजह से शुगर की कीमत (एक्स मुंबई) इस साल 4 फीसदी कम हुई है। वहीं, गन्ने की कीमत में पिछले साल के मुकाबले 15-20 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। इनवेस्टर्स इस सेक्टर में दिलचस्पी लेते हैं या नहीं, यह अगले साल के प्रोडक्शन एस्टिमेट से तय होगा। अगर प्रोडक्शन इसी लेवल पर रहा, तो एथनॉल और कुछ हद तक शुगर सेक्टर के डीकंट्रोल होने से कंपनियों का प्रॉफिट बढ़ सकता है।